

18. दोहे

- रहीम

रहिमन सूधी चाल सौं, प्यादा होत वजीर ।
फरजी मीर न हो सके, टेढ़े की तासीर ॥
जो रहीम उज्जम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ॥
रहिमन विपदा तू भली, जो थोरे दिन होय ।
हित अनहित या जगत में, जान परत सब कोय ॥
तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियहिं न पानि ।
कहि रहीम पर काज हित, सम्पति संचहिं सुजानि ॥
कहु रहीम कैसे निभै, बेर केरु को संग ।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग ॥
जो गरीब सो हित करें, धनी रहीम वो लोग ।
कहां सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ॥
रहिमन चुप है बैठिये, देखि दिनन के फेर ।
जब नीके दिन आई हैं, बनत न लगिहीं देर ॥
रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय ।
सुनि अठिलैहें लोग सब, बांति न लैहें कोय ॥
रहिमन लाख भली करौ, अगुनी अगुन न जाय ।
राग सुनत पय पियत हूँ, सांप रहज धरि खाय ॥
सब कोई सब सों करै, राम जुहार सलाम ।
हित रहीम तब जानिये, जा दिन अटकै काम ॥
टूटै सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार ।
रहिमन फिर-फिर पोइए, टूटे मुक्ताहार ॥
कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुण तीन ।
जैसी संगति बैठिये, तैसोई फल दीन ॥
रहिमन ओछे नरन ते, तजौ बैर अरु प्रीति ।
काटे चाटे स्वान के, दुंहं भाति विपरीति ॥
ससि, संकोच, साहस, सलिल, मान, स्नेह रहीम ।
बढ़त-बढ़त बढ़ि जात है, घटत-घटत घटि सीम ॥